

संवैधानिक उपचारों का अधिकार एवं महत्त्व

संवैधानिक उपचारों का अधिकार सवयं में कोई अधिकार न होकर अन्य मौलिक अधिकारों का रक्षणापाय है। इसके अंतर्गत व्यक्तिमौलिक अधिकारों के हनन की अवस्था में न्यायालय की शरण ले सकता है। इसलिये डॉ० अंबेडकर ने अनुच्छेद 32 को संवैधानिक कासबसे महत्त्वपूर्ण अनुच्छेद बताया- “एक अनुच्छेद जिसके बनि संवैधानिक अवस्थीन है, यह संवैधानिकी की आत्मा और हृदय है।”

- अनुच्छेद 32 का उद्देश्य मूल अधिकारों के संरक्षण हेतु गरंटी, प्रभावी, सुलभ और संक्षेप उपचारों की व्यवस्था है। इसके अंतर्गत केवल मूल अधिकारों की गरंटी दी गई है अन्य अधिकारों की नहीं, जैसे- गैर मूल संवैधानिक अधिकार, असंवैधानिक लौकिक अधिकार आदि।
- भारतीय संवैधानिक द्वारा सर्वोच्च न्यायालय और उच्च न्यायालय को अधिकारों की रक्षा करने के लिये लेख, निर्देश तथा आदेश जारी करने का अधिकार है।
- सर्वोच्च न्यायालय (अनुच्छेद 32 के तहत) एवं उच्च न्यायालय (अनुच्छेद 226 के तहत) रटि जारी कर सकते हैं।
- अनुच्छेद 32 (2) में रटियों की चर्चा की गई है जिससे संवैधानिक उपचारों के अधिकार की महत्त्व प्रतिपादित होती है।
- **बंदी प्रत्यक्षीकरण (Habeas Corpus) रटि-**
 - इसके अंतर्गत गरिफ्तारी का आदेश जारी करने वाले अधिकारी को आदेश देता है कि वह बंदी को न्यायाधीश के सामने उपस्थिति दिर्ज करें और उसके कैद करने की वजह बताए। न्यायाधीश अगर उन कारणों से असंतुष्ट होता है तो बंदी को छोड़ने का हुक्म जारी कर सकता है।
- **परमादेश (Mandamus) रटि-**
 - इसके द्वारा न्यायालय अधिकारी को आदेश देती है कि वह उस कार्य को करें जो उसके क्षेत्र अधिकार के अंतर्गत है।
- **प्रतिष्ठित (Prohibition) रटि-**
 - कसी भी न्यायिक या अरद्ध-न्यायिक संस्था के विरुद्ध जारी हो सकता है, इसके माध्यम से न्यायालय के न्यायिक अरद्ध-न्यायिक संस्था को अपने अधिकार क्षेत्र से बाहर निकिलकर कार्य करने से रोकती है।
 - प्रतिष्ठित रटि का मुख्य उद्देश्य कसी अधीनस्थ न्यायालय को अपनी अधिकारता का अतिक्रमण करने से रोकना है तथा विधियकि, कार्यपालिका या कसी नजी व्यक्तिया नजी संस्था के खलिफ इसका प्रयोग नहीं होता।
- **उत्प्रेरण (Certiorari) रटि-**
 - यह रटि कसी वर्षित न्यायालय द्वारा कसी अधीनस्थ न्यायालय या न्यायिक निकाय जो अपनी अधिकारता का उल्लंघन कर रहा है, को रोकने के उद्देश्य से जारी की जाती है।
 - प्रतिष्ठित व उत्प्रेरण में एक अंतर है। प्रतिष्ठित रटि उस समय जारी की जाती है जब कोई कार्यवाही चल रही हो। इसका मूल उद्देश्य कार्रवाई को रोकना होता है, जबकि उत्प्रेरण रटि कार्रवाई समाप्त होने के बाद नियम समाप्ति के उद्देश्य से की जाती है।
- **अधिकार पूर्णांक (Qua Warranto) रटि-**
 - यह इस कड़ी में अंतिम रटि है जिसका अर्थ ‘आप क्या प्राधिकार है?’ होता है यह अवैधानिक रूप से कसी सार्वजनिक पद पर आसीन व्यक्ति के विरुद्ध जारी किया जाता है।
 - साधारण अवस्था में संवैधानिक उपचारों को नलिंबति नहीं किया जाएगा। संसद इनको लागू करने के लिये उचित अधिनियम बनाएगा। आपातकालीन स्थिति में अध्यादेश अथवा अधिनियम के द्वारा भारत या उसके कसी प्रदेश में आवश्यकतानुसार कुछ या सभी मौलिक अधिकारों को नलिंबति किया जा सकता है।
- ये रटि, अंग्रेजी कानून से लिये गए हैं जहाँ इन्हें ‘विशेषाधिकार रटि’ कहा जाता था। इन्हें राजा द्वारा जारी किया जाता था जिन्हें अब भी ‘न्याय का झरना’ कहा जाता है।

उपरोक्त बटिओं से संवैधानिक उपचारों के अधिकार एवं उसकी महत्त्व को देखा जा सकता है। संवैधानिक उपचारों का अनुच्छेद नागरिकों के लिये जिससे भारतीय संवैधानिक उपचारों का महत्त्वपूर्ण हसिसा है।